	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय **बाँदा - २१०००१ (उ०प्र०)** **Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)**

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 130 /2025) Year: 7th

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 20.05.2025**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ संभावित अधिक तापमान के मद्देनजर कद्दू वर्गीयए बैगनए टमाटरए मिर्च तथा भिंडी की खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ ग्रीष्म कालीन उत्पाद हेतु रोपित टमाटरए बैगन व मिर्च की फसलों में समुचित नमी बनाए रखें ताकि अत्यधिक तापमान से पुष्पपतन कम हो। ➢ मिर्चए टमाटरए बैगनए भिंडी में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु की नव रोपित फसलों में मृदा नमी संरक्षणहेतु सूखी घास या पुआल का पलवार प्रयोग करें। ➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए चिन्हित खेतों की जुताई कर दें ताकि रोग कीट तथा खरपतवार के बीज नष्ट हो जाय।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	***शस्य-प्रबंधन*** ➢ इस माह मे काफी गर्मी होने की वजह से तापमान को ध्यान में रखते हुये सभी फसलों में हल्की सिंचाई अवश्य करें। सिंचाई हमेशा शाम या सुबह के समय करना चाहिये। ➢ हरी खाद हेतु मूँग, सनई, ढ़ैचा की बुआई प्रथम सप्ताह में अवश्य पूर्ण करें। ➢ मिट्टी परीक्षण हेतु नमूने एकत्र करें तथा परीक्षण हेतु जिला कृषि कार्यालय से सम्पर्क करें। ➢ आवश्यक होने पर मृदा समतलीकरण अवश्य कर लें। ➢ कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि खेत में ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अवश्य करें। गर्मी की जुताई पूर्ण कर खेत को खुला छोड़ दे ताकि कीट के अंडे–बच्चे रोगजनक एवं खरपतवार के बीज आदि नष्ट हों जायें। ***मृदा-प्रबंधन*** ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवष्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।

		➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाष का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एक तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा। ➢ विगत में मिट्टी परीक्षण हेतु भेजे गये मृदा नमूना परीक्षण की रिपोर्ट एकत्र कर नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से चर्चा कर खरीफ फसलो हेतु फसलानुसार उर्वरको की व्यवस्था करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	राज्यके अधिकतर हिस्सों में दिन का तापमान 40Cसे ज्यादा जा चुका है। जिसके कारण दिन में तेज धूप के साथ–साथ लू भी चल रही है। यह लू इंसान के साथ–साथ पशुओं के लिए भी काफी नुकसान देय है। ऐसे में पशुओं को लू लगने व उनके बीमार होने की संभावना बनी रहती है और निम्नलिखित बीमारियाँ हो सकती है –पशुओं को आहार लेने में अरूचि, तेज बुखार, हाफना, नाक से स्त्राव बहना, ऑखों से ऑसू गिरना, आखों का लाल होना, पतला दस्त होना, शरीर में पानी की कमी होने से लड़खराकर गिरना, आदि ये सभी लू लगने के प्रमुख लक्षण है। **लू से पशुओं को बचाने के लिए निम्न उपाय करें –** ➢ पशुओं को सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक शेड (पशुबाडे) में ही रखें एवं शेड को खुला न छोड़े अपितु बोरे व टाट से ढककर रखें। ➢ गर्म हवाओं के थपेडों से बचाने के लिए टाट में पानीका छिडकाव कर वातावरण को ठण्डा बनाये रखें। ➢ पशुओं को पर्याप्त मात्रा में आहार तथा पीने के लिए ताजा व स्वच्छ पानी दें। ➢ विवाह व अन्य आयोजन से बचे हुए बासी भोजन पशुओं को न खिलायें। पशुबाडे की नियमित साफ–सफाई रखें। ➢ नवजात बछडें व बछियों की विशेष देख–भाल करें एवं संकर नस्ल तथा गौवंशी पशुओं को पानी की उपलब्धता के आधार पर कम से कम दिन में एक बार अवश्य नहलाना चाहिए। यदि पशु असामान्य दिखे तो तुरन्त निकट के पशु चिकित्सालय से तत्काल सलाह लेनी चाहिए।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ गेहूँ में भंडारण कीट के नियंत्रण हेतु गेहूँ की मड़ाई के बाद उसे अच्छी तरह सुखा लें जिससे कि नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से अधिक न हो। भण्डारण के पूर्व बखारी, कोठिलों तथा कमरे को अच्छी तरह साफ कर लें। एल्यूमिनियम फास्फाइड 56 प्रतिशत पाउच की 10 ग्राम मात्रा प्रति मै0टन की दर से डालकर बखारी/भण्डार गृहों को अच्छी तरह से वायुरूद्ध कर बंद कर देना चाहिये। ➢ मूँग/उर्द में बालदार गिडार के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। जैविक नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए अथवा एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25

		ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें। फली बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.25 लीटर मात्रा को 600–700 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करें। ➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया/कद्दू वर्गीय सब्जियों आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें। थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी मे घोलकर 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को 24 – 48 घंटा तक शोधित कर लगाने से लगभग 500 मी0 तक की फल मक्खी आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ सब्जियों की फसलों में माईट की निगरानी करते रहें व आवश्यकता पड़ने पर घुलनशील गंधक का 3 ग्राम/लीटर अथवा स्पाइरोमेसिफेन 0.8 मिली/ली की दर से छिड़काव करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ ग्रीष्मकालीन मूंग व उड़द: ➢ रोग: पीला मोजेक वायरस ➢ कारक: सफेद मक्खी ➢ नियंत्रण: प्रारंभिक अवस्था में ही रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। ➢ सफेद मक्खी की संख्या अधिक होने पर थायोमेथॉक्साम ग्राम प्रति लीटर पानी में छिड़कें। ➢ 7..10 दिन के अंतराल पर निगरानी करें। ➢ सब्जी फसलें (भिंडीए लौकीए टमाटरए करेला आदि) : ➢ रोग: झुलसा रोग ➢ पाउडरी मिल्ड्यू

		➢ नियंत्रण:कार्बेन्डाजिम या हेक्साकोनाजोल ग्राम प्रति लीटर छिड़कें। ➢ रोग-प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करें। ➢ फसल में उचित वायुसंचार और जल निकासी सुनिश्चित करें। ➢ पुराने पत्तों को हटाते रहें। ➢ आम रोग: एन्थ्रेक्नोज फल झड़ना ➢ नियंत्रण:कापर ऑक्सीक्लोराइड या कार्बेन्डाजिम का छिड़काव करें। ➢ गिरे हुए फलों को खेत से निकालें। ➢ फलों को संग्रहण से पहले गर्म पानी में उपचारित करें। ➢ धान की नर्सरी तैयारी (यदि सिंचाई उपलब्ध है) : ➢ बीज जनित रोगों से बचाव: ➢ बीज को बोने से पहले कार्बेन्डाजिम / 2 ग्राम/किलोग्राम बीज से उपचारित करें। ➢ जलजमाव से बचने हेतु नर्सरी स्थल का उचित चयन करें। ➢ सामान्य सुझाव: ➢ खेतों की समय-समय पर निगरानी करें और रोगों की प्रारंभिक अवस्था में ही नियंत्रण करें। ➢ जैविक विकल्प जैसे ट्राइकोडर्मा विरिडे का बीज उपचार या खेत में प्रयोग करें। ➢ फसल चक्र अपनाकर रोगों को नियंत्रित रखें। ➢
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	मई का महीना भारत में अक्सर भीषण गर्मी और शुष्क मौसम का होता है। इस समय फलदार पौधों (जैसे आम, नींबू, अमरूद, अनार, पपीता आदि) को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है ताकि वे गर्मी के तनाव को झेल सकें और फलों का विकास ठीक से हो सके। ➢ इस माह मे गर्मी होने की वजह से काफी सावधानियां अपनानी चाहिये। सिंचाई 15 दिन के अन्तराल पर अवष्य दें। बूंद—बूंद सिंचाई सबसे अधिक लाभकारी विधि है। ➢ भूमि के जल को मलचिंग द्वारा संरक्षित किया जा सकता है जिसमें पॉलीथीन शीट, सूखी धास फूस, चने का भूसा इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है। ➢ नये बाग लगाने के लिए गढ्ढे अभी खोद दें ताकि धूप से कीड़ो तथा बीमारियों का नियंत्रण हो सके । माह के अन्त में इन गढ़ढों में आधा उपर वाली मिट्टी तथा आधी कम्पोस्ट में क्लोरपाइरीफास दवाई मिलाकर पूरी तरह से उपर तक भर दें । ➢ आम के पेड़ों की देखभाल अच्छी तरह से करते रहें तथा जड़ों में समय —समय पर पानी देते रहें ताकी पानी के अभाव में फल मुरझाकर नीचे न गिरने लगे।

		➢ आम में मई माह में फूलों की जगह पत्तों के गुच्छे बन जाते हैं इन्हें तोड दें । इस समस्या से निदान पाने के लिये एन0 ए0 ए0 का 200 पी. पी. एम. घोल का छिडकाव करें । ➢ नीबू प्रजाति के पोधों में फल गिरने की शिकायत मिलती है, इसे २–४ डी (10 पी. पी. एम.) या 0.7 प्रतिशत जिंक सल्फेट या आरोफुगिन (20 पी. पी. एम.) के घोल का स्प्रे करने पर रोका जा सकता है। ➢ इस माह में केला और पपीता के फलों को पत्तियों व बोरियों से ढक कर तेज धूप से बचाया जाता है। ➢ बेर में कटाई छंटाई के लिए मई का महीना उपयुक्त होता है, जब पौधों की अधिकांश पत्तियां झड़ चुकी होती हैं तथा पेड़ सुषुप्तावस्था में हो, सबसे उपयुक्त माना जाता है । रोगों के प्रकोप से बचाव के लिए शाखाओं के कटे हुए स्थानों पर फफूंदनाशी (नीला थोथा या ब्लाइटाक्स– 50) का लेप कर देना चाहिए । ➢ गर्मियों में आमतौर पर वातावरण निरंतर शुष्क होता जाता है, जिससे मृदा में पानी की कमी होने लगती है । अमरूद में उचित समय पर सिंचाई नहीं होने पर फलों की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है, जिसके परिणामतः फल छोटे रह सकते है, इसलिए 8 से 10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई कर दी जानी चाहिए। फलमक्खी नियंत्रण के लिए 1.5 मि.ली. प्रोफेनोफास प्रति लीटर पानी में मिलाकर फल परिपक्कता के पूर्व 10 दिनों के अंतर पर 2–3 छिड़काव करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	• गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु क्रमाः छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। • कृषि वानिकी प्रणाली के तहत लगाए गए दो–पांच साल के पेड़ों को पलवार करना (घास–पात से ढकना) की सलाह दी जाती है ताकि मिट्टी में नमी बरकरार रहे। • किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पौधारोपणध्वृक्षारोपण से पूर्व 30 X 30X30 बउ आकार के गड्ढे तैयार कर लें। ग्रीष्म लहर के दौरान पेड़ों की अनावश्यक छंटाई या प्रत्यारोपण से बचें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	10. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
डॉ मयंक दुबे	